

Isaiah 20-32

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 20**

**Theme – Prophecy against Egypt & Cush  
(still warning Judah not to trust them to  
rescue Judah)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 21**

**Theme – Babylon is fallen (Rev 14:8 &  
18:2); oracles about Edom & Arabia**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 22**

**Theme – Oracle concerning Jerusalem; people doubt God & refuse to repent; “living parable” of Shebna being replaced by Eliakim (means “God raises or sets up”)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 23**

**Theme – Oracle concerning Tyre & Sidon (in modern day Lebanon)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 24**

**Theme – Judgment upon the whole earth; Isaiah weeps (showing the heart of God); time of judgment/ Great White Throne judgment from Rev ch 20**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 25**

**Theme – Lavish banquet; images from Rev 21:4; declaration that “This is our God, for Whom we waited!” (v9)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 26**

**Theme – Song of rejoicing that will be sung in “that day” (the Kingdom of God in the New Earth?)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 27**

**Theme – “In that day” appears 3x’s (v1, 2, 12); God will strike down Leviathan; God is the Keeper of the “vineyard”; Israel should rely on God’s protection; Israel will be purified by/ through their banishment (v9); even in coming judgment, God will gather His people to Himself (v12 & 13)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 28**

**Theme – Woe #1 – Judgment on Northern & Southern Kingdoms; line upon line, precept upon precept (v13); word of hope – judgment does not last forever (v28)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 29**

**Theme – Woe #2 against Jerusalem (Ariel – “lionsess of God”); this people draws near with their lips, but their hearts are far away (v13);**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 30**

**Theme – Woe #3 to rebellious “children” (Judah is seeking an alliance with Egypt); speak to us “smooth” words (v10); the Lord LONGS to be gracious to you (v18); “this is the way, walk ye in it” (v21); judgment upon Assyria;**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 31**

**Theme – Woe #4 continued (woe to those rebellious children from ch 30); God will protect Jerusalem like a “young lion”; Assyrians struck down by a sword not wielded by a man (2Kings 19:35 & Isa 37:36)**

---

---

---

---

---

---

---

**Ch 32**

**Theme – Just & righteous leaders will rule; complacent women called to mourn; the Spirit of God will be poured out upon Jerusalem (like a reference to 2<sup>nd</sup> coming of Lord Jesus in Zech 12:10)**

---

---

---

---

---

---

---